International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पर्यावरण संरक्षण जागरूकता अभियान

अंजुला जैन

प्राणी विज्ञान विभाग, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

सारांश

पर्यावरण प्रदूषित होने से मानव जाति को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण प्राणी जगत के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है, यहाँ तक कि प्राणियों के लिए उपयोगी निर्जीव चीजे भी पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित हो रही है। इसलिए पर्यावरण के प्रति जागरूकता को लेकर विश्व के वैज्ञानिक, समाजशास्त्री एवं शिक्षाविद् आदि सभी चिन्तित है। शिक्षा के अध्ययन के क्षेत्र में पर्यावरण शिक्षा का एक नया क्षेत्र विकसित हुआ है, तो शिक्षाविदों, शिक्षकों, तथा छात्रों के लिए नया अध्ययन एवं अध्यापन का क्षेत्र है। आज बहुत सी सामाजिक संस्थाऐं भी पर्यावरण को लेकर काफी सचेत है। यदि उन्हें पर्यावरण प्रदूषण की सम्पूर्ण जानकारी होगी तभी वे उसका समुचित ज्ञान समाज को उचित रूप से करा सकेगे अन्यथा आधा-अधूरा ज्ञान ही वितरित करेगे। इसका प्रभाव समाज पर अवश्य ही गलत पड़ेगा। इस अध्ययन में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति लोग कितनी जानकारी इस विषय में रखते है तथा अपने पर्यावरण के प्रति वे कितने जागरूक है, उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

कुंजीः भौतिक पर्यावरण, जैविक पर्यावरण तथा मनो-सामाजिक पर्यावरण

पर्यावरण एक परिचय

पर्यावरण को कभी-कभी वातावरण भी कहा जाता है। पर्यावरण सामाजिक तथा प्राकृतिक दोनों ही प्रकार का होता है। सामाजिक वातावरण से तात्पर्य मानवों के बीच परस्पर सम्बन्धों से है, जबकि प्राकृतिक वातावरण से तात्पर्य प्राकृतिक वस्तुओं जैसे जल, हवा, धरती, वृक्ष, वनस्पति आदि से हैं। पर्यावरण का मानव के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। मनुष्य को प्रकृति का पुत्र कहा जाता है, प्रकृति की गोद में ही वह बड़ा होता है। पर्यावरण अर्थात वायु, जल, जमीन, भोजन, पेड़-पौधे आदि ही मानव जीवन को सहज, स्वच्छ और सुखद बनाते हैं। वस्तुतः प्रकृति माँ भी माता के समान हमारा लालन-पालन करती है तथा सुरक्षा प्रदान करती है। पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के मध्य एक संतुलन का होना आवश्यक है। यदि मनुष्य प्रकृति के नियम को समझ कर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा उपभोग इस प्रकार से करता है कि प्राकृतिक संतुलन बना रहे, तब ही सृष्टि के द्वारा निर्मित पर्यावरण तथा मानव जाति स्वस्थ रह सकती है।

वर्तमान युग जिसमें हम 'ईशानुकम्पा' से जीवित हैं, प्रौद्योगिकी का युग है। प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन में बहुत सारे परिवर्तन किए हैं। व्यक्ति का जीवन स्तर उन्नत हुआ है, खेत, खान तथा पशुओं से होने वाली पैदावार बढ़ी है। जीवनोपयोगी सामग्रियों की बाढ आई हैं। इन सब उपलब्धियों के फलस्वरूप औसत आयुर्मान में निरन्तर वृद्धि होती चली आ रही है और बाल-मृत्यु दर घटती चली जा रही है। आयुर्मान में वृद्धि और बाल-मृत्यु दर में कमी होने के फलस्वरूप जनाधिक्य हुआ है जिससे व्यक्ति सरल प्राकृतिक जीवन को छोड़कर कृत्रिम जीवन जीने को बाध्य है। कृत्रिम जीवन हमारे सामने नई समस्याएं लेकर उपस्थित हुए है। ये समस्याएं है- ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन की पर्त में छेद, अम्लीय वर्षा, धुन्ध, कोहरा, कार्बन डाईआक्साइड तथा कार्बन मोनो-आक्साइड की प्रतिशतता में वृद्धि, वायु में सिलिका कणों की प्रतिशतता में वृद्धि तथा कीटनाशी पदार्थो के कारण वायु का विषाक्त होना, जल का संदूषण तथा जल का प्रदूषण, मृदा की विषाक्तता तथा मृदा का अपरदन तथा मृदा की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उत्पादकता में कमी, भोज्य विषाक्तता, भोज्य पदार्थों का संदूषण, कुपोषण, अल्प पोषण तथा अति पोषण के रोगों का व्यापक होना, निर्वनीकरण से होने वाली विभिन्न हानियाँ तथा रेडियोधर्मी विकिरणों के दुष्प्रभाव इन समस्याओं का समाधान करना मानव जाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

यदि हम विश्व के अतीत पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होता है, कि प्रारम्भिक मानव का जीवन कितना सुखप्रद था। नदी और तालाबों से उठी उन्मुक्तलहरों, तरूवरों की सुरम्य, शीतल, सुरभित, सुगन्धित बहती हुई हवा, तरूवरों से किसलय एवं उन्मुक्त हवास बिखेरते हुए पुष्प, तरूवरों से प्रसंग करती हुई नव कलिकायें, किलोरे करते हुए मृगयूथ, वृक्षों की शाखाओं, प्रशाखाओं को विमेदित करते हुए पक्षीगण का कलरव एवं सिंहनाद जो मन को रोमांचित कर देता था, ऐसा मनोरम दृश्य एवं पर्यावरण मनुष्य को आंचल में छिपाये माँ के समान उसके पालन-पोषण एवं विकास में रत था।

पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य के अस्तित्व से उसी प्रकार जुड़ा है, जिस प्रकार आर्थिक विकास की उन्नति। अतः आर्थिक विकास के प्रयासों में इस बुनियादी तथ्य को ध्यान में नहीं रखते तो वे प्रयास वस्तुतः विकास को नहीं अपितु विनाश को ही आमंत्रित करते है। जिस वन सम्पदा से मानव को विभिन्न प्रकार के लाभ उसके विकास हेतु होते रहे हैं, उन्हें नजरअंदाज कर उनसे होने वाले लाभ से वंचित रह जायेगे। आज व्यक्ति अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वनों का शोषण करने में बिल्कुल नहीं हिचकिचाता। विकास के नाम पर यही सब करने की बात नहीं इससे विनाश अवश्यंभावी है, क्योंकि 'इकोनोमी' और 'इकोलोजी' की परस्पर घनिष्ठता की समझ देशवासियों को नहीं है। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में उल्लेख उपलब्ध है कि भारतीयों का तो प्रकृति से गहरा सम्बन्ध रहा है। हमारी संस्कृति का मूल आयाम है कि हम पोषण करते है परन्तु शोषण व विध्वंस नहीं करते। दोहन से पूर्व और उपरान्त पोषण से संतुलन बना रहता है। लेकिन दोहन बगैर पोषण से शोषण होकर विध्वंस जैसी स्थिति बन जाती है। आज हम निरंतर वनों का दोहन नहीं शोषण करने में लगे हुए है, जिससे मनुष्य एवं वन सम्पदा में असंतुलन द्रुतगति से बढ़ रहा हैं।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज के सम्पूर्ण विश्व की एक विराट समस्या है। न केवल भारत जैसे विकासशील राष्ट्र वरन समस्त विकसित राष्ट्र भी पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभावों से त्रस्त हैं। पर्यावरण प्रदूषण वास्तव में विकास तथा जनसंख्या वृद्धि का सह-प्रभाव है। विकास की अंधाधुंध दौड़ में प्राकृतिक साधनों के उपयोग करने के लिए मानव प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा है, तथा जनसंख्या वृद्धि प्रकृति के इस दोहन को और भी अधिक बढ़ा देती है, जिसके फलस्वरूप पारिस्थितिकी संतुलन गड़बड़ा गया है। जीव-जन्तु व वनस्पति की अनेक प्रजाति विलुप्त हो चुकी है, जबकि अन्य अनेक प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में है। प्रकाश, शोर व प्रदूषण के कारण जीव-जन्तुओं की दिनचर्या पर कुप्रभाव पड़ रहा है। यहाँ तक की उनकी प्रजनन क्षमता में परिवर्तन आ रहा है तथा प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। परिणामतः वैश्विक स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई हैं जिसके शीघ्रतिशीघ्र निराकरण की आवश्यकता है।

पर्यावरण की परिभाषा

वे घटक जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं, उन सभी को संयुक्त रूप से पर्यावरण ;म्दअपतवदउमदजद्ध कहा जाता है। पर्यावरण शब्द अंग्रेजी भाषा के म्दअपतवदउमदज शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। म्दअपतवदउमदज शब्द की उत्पत्ति म्दअपतवद से हुई है जिसका अर्थ चारों ओर का घेरा होता है। पर्यावरण की वैज्ञानिक परिभाषा निम्न प्रकार है-

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

''पर्यावरण उन सभी जैविक ;ठपवजपबद्ध तथा अजैविक ;ड्डइपवजपबद्ध कारकों का समूह है जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं और किसी न किसी रूप में जीवों के जीवन को प्रभावित करते हैं।''

पर्यावरण अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र है, इसीलिए इसको कई प्रकार से परिभाषित किया गया है, इसकी कुछ सर्वमान्य परिभाषायें निम्न हैं–

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में पर्यावरण को इस प्रकार परिभाषित किया गया है–''पर्यावरण भौतिक, रासायनिक तथा जैविक कारकों का जटिल समूह है जो किसी जीवन तथा पारिस्थितिकीय समुदाय ;ठपवजपब ब्वउउनदपजलद्ध को प्रभावित करता है और इस प्रभाव से जीवों का स्वरूप तथा जीवितता निर्धारित होती है।''

प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता डॉ० सविन्द्र सिंह ने पर्यावरण के इस प्रकार परिभाषित किया है– ''पर्यावरण भूगोल सामान्य रूप से जीवित जीवों तथा पर्यावरणके मध्य तथा मुख्य रूप से प्रौद्योगिक स्तर पर विकसित आर्थिक मानव एवं उसके प्राकृतिक संसाधनों के मध्य अन्तरसम्बन्धों के स्थानिक गुणों का अध्ययन है।''

विशेषज्ञों ने पर्यावरण के कई प्रकार बताऐ है, जिसे सामान्य रूप से तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। (1) भौतिक पर्यावरण (2) जैविक पर्यावरण (3) मनो–सामाजिक पर्यावरण

भौतिक पर्यावरण

पर्यावरण का प्रमुख भाग भौतिक पर्यावरण से मिलकर बना है जिसके अन्तर्गत वायु, जल, खाद्य; पदार्थ, भूमि, ध्वनि, उष्मा, प्रकाश, नदी, पर्वत, खनिज पदार्थ विकिरण एवं अन्य पदार्थ सम्मिलित है

जैविक पर्यावरण

सारभौम में जैविक पर्यावरण बहुत बड़ा भाग है, जो मानवों के इर्द–गिर्द रहता है। सामान्यता मनुष्य इन जैविक अवयवों के साथ अन्तः सम्बन्ध एवं सामंजस्य बनाने का प्रयास करता है। जैविक पर्यावरण को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– प्रथम पौधो का वातावरण तथा दूसरा जीवों एवं जानवरों का वातावरण।

मनो–सामाजिक पर्यावरण

मनो–सामाजिक पर्यावरण मानव के सामाजिक सम्बन्धों से प्रकट होता है। इसके अन्तर्गत हम सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में मानव के व्यक्तित्व के विकास का अध्ययन करते है।

पर्यावरण अध्ययन का क्षेत्र

पयार्वरण के अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत है लेकिन अभी तक यह विषय अपनी विकासमान अवस्था में है, और अभी तक इसकी विषय वस्तु का स्पष्ट निर्धारण नहीं हो पाया है। वैज्ञानिकों तथा प्रकृतिविदों ने इस विषय की कोई सीमा रेखा भी निर्धारित नहीं की है। अभी तक की विवेचनाओं के आधार पर पर्यावरण अध्ययन के निम्न क्षेत्र हो सकते हैं–

1. पारिस्थितिकी में– पारिस्थितिकी वह विज्ञान है जिसमें जीवन तथा उसके वातावरण के आपसी सम्बन्ध का अध्ययन करते है। जनसंख्या तथा प्रदूषण पारिस्थितिकी के दो महत्वपूर्ण विषय हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण पर्यावरण परिवर्तन इन्हीं दो विषयों से सम्बन्धित है। अतः पारिस्थितिकी पर्यावरण अध्ययन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

2. मानव स्वास्थ्य में– मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण की सीधा सम्बन्ध है। मानव के अनेकों रोग पर्यावरण के माध्यम से ही फैलत है। ये माध्यम वायु, जल तथा मिट्टी हो सकते हैं। पर्यावरण का कोई भी परिवर्तन सीधे ही मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इसीलिए मानव स्वास्थ्य पर्यावरण अध्ययन का आवश्यक क्षेत्र है।

3. वानिकी के क्षेत्र में– वृक्षों का प्राकृतिक समूह वन कहलाता है और आज के समय में वृक्षों के महत्व को देखते हुए इन्हें हरा सोना ;ळतममद ळवसकद्ध कहा जाने लगा है वनों के प्रबन्धन को वानिकी ;थ्वतमेजतलद्ध कहते है। वानिकी के लिए सभी देशों की सरकारों ने अलग से वन विभाग बनाया है। पहले वनों को संरक्षण देना केवल सरकार का ही कार्य माना जाता था। लेकिन अब यह तथ्य स्थापित हो चुका है कि वन समाज की धरोहर हैं तथा सरकार के साथ–साथ समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वनों के संरक्षण तथा संवर्धन में अपना नैतिक योगदान दे। श्री सुन्दर लाल बहुगुणा ने ‘‘चिपको आन्दोलन’’ चलाकर अपना सम्पूर्ण जीवन वनों के संरक्षण में समर्पित कर दिया। वानिकी से सम्बन्धित कई संस्थान एवं संस्थायें बनाई गयी है। जिनमें रोजगार के अच्छे अवसर है, इनमें से कुछ निम्न हैं–

1. वन अनुसन्धान संस्थान ;थ्त्प्द्ध देहरादून।
2. मरूक्षेत्र वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर।
3. काष्ठ प्रौद्योगिकी व अनुसन्धान संस्थान, बैंगलोर।
4. वर्षा व पर्णपाती वन संस्थान, जोरहाट।
5. वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर।

4. जैव प्रौद्योगिकी में– वर्तमान युग को जैव–प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। पर्यावरण एवं जैव–प्रौद्योगिकी ;म्दअपतवदउमदज ठपवजमबीदवसवहलद्ध का एक दूसरे में महत्व को देखते हुए इन दोनों को मिलकर पर्यावरण जैव–प्रौद्योगिकी नामक शाखा बनाई गयी है। इस शाखा के माध्यम से जैव–प्रौद्योगिकी के द्वारा पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण की गुणवत्ता तथा प्राकृतिकी नामक शाखा बनाई गयी है। इस शाखा के माध्यम से जैव–प्रौद्योगिकी के द्वारा पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण की गुणवत्ता तथा प्राकृतिकता को बनाये रखने के उपाय किये जा रहे है। इसी कड़ी में ए0एम0 चक्रवर्ती ने सुपरबग ̄;नचमतइनहद्ध नामक जीवाणु विकसित किया है जो समुद्र में ऑयल स्पिल्स ;व्पस ̄चपससेद्ध के प्रदूषण को रोकता है। जैव–प्रौद्योगिकी के उपयोग से वन्य जीव संरक्षण में भी मदद मिलेगी।

विस्तार से अध्ययन करने पर यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि आज कोई भी पर्यावरण अध्ययन से अछूता नहीं है इसलिए इसके माध्यम का विस्तृत क्षेत्र है। पर्यावरण अध्ययन के महत्व को देखते हुए ही भारत के उच्चतम न्यायालय ने इसे एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाने का आदेश दिया है।

पर्यावरण ज्ञान

पर्यावरण ज्ञान से अभिप्राय पर्यावरण का अध्ययन, पर्यावरण के प्रति जागरूकता व जानकारी से है। पर्यावरण का निर्माण कैसे होता है? कौन–कौन से तत्व इसमें सम्मिलित है? इनका संरक्षण कैसे होता है? इत्यादि का ज्ञान पर्यावरण ज्ञान कहलाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 7, July- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

निष्कर्ष

पर्यावरण सभी प्राकृतिक संसाधनों की समग्रता का नाम है। जो धरती माता ने मानव जाति के लिए वरदान रूप में दिये हैं। ये संसाधन जमीन, वायु, वन, वनस्पति और जीव-जन्तु हैं, जो हमें घेरे हुए हैं और जो प्रतिदिन हमारे जीवन को प्रभावित करते रहते हैं।

अध्ययन की उपयोगिता

पर्यावरण शिक्षा तभी प्रभावी हो सकती है, जब प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर सहित उच्च स्तर पर भी पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न आयामों को शिक्षण और शिक्षणेत्तर गतिविधियों में शामिल किया जाए। शैक्षिक दृष्टि से पर्यावरण शिक्षा की यही उपयोगिता है कि समाज में उच्च स्तर के पर्यावरण की वैज्ञानिक एवं पर्याप्त जानकारी प्रदान करना आवश्यक है जिससे उनमें पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण हेतु सम्यक् दृष्टिकोण का विकास किया जा सके।

पर्यावरण का सम्बन्ध मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पक्ष से है। मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति का स्रोत पर्यावरण है। पर्यावरण शिक्षा एवं ज्ञान का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। यह कथन सत्य है कि "जहाँ कोई जागरूकता नहीं होती वहां अल्प या कोई क्रिया नहीं होती।" अतः पर्यावरण के संरक्षण और प्रबंधन सहित कई कारणों से वर्तमान परिस्थितियों में पर्यावरण शिक्षा अत्यन्त उपयोगी है।

प्रस्तुत अध्ययन का सामाजिक संगठनों में उपयोग किया जा सकता है। संगठनों के पर्यावरण ज्ञान को देखते हुए उन्हें और अधिक विकसित किया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा के प्रति उन्हें अधिक सजग बनाया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकन कर उसमें नवीन सत्प्रत्यय जोड़े जा सकते है। संगठनों में पर्यावरण संचेतना के प्रति प्रभावी दृष्टिकोण स्थापित करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों, गोष्ठियों, सरस्वती यात्राओं, प्रोजेक्ट कार्यो आदि का आयोजन किया जा सकता है। प्राचीन कालीन पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य का नवीन परिप्रेक्ष्य में उपयोग किया जा सकता है। समाज तथा सामाजिक संगठनों में यह भावना विकसित की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल, के.सी. (1978) "एनवायर्नमेंटल बायोलोजी" बिकानेर (भारत) एग्रो बॉटनिकल पब्लिकेशन।

चन्द्र, एस. (1992) पर्यावरण, प्रदूषण एवं मानव स्वास्थय आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली।

दुबे.ए., के. (1999) "पर्यावरण विधिया" सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

दुबे, आर. (2004) "पर्यावरण शिक्षा, सैन्ट्रल ला पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

इर्विदि, ओ.पी. (1982) वर्ल्ड रिलिजन एण्ड एनवायर्नमेन्ट गीतांजली पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

गर्ग, बी.एल. (1990) "पर्यावरण, प्रकृति और मानव" अभिनव प्रकाशन, अजमेर पृष्ठ 172.

गोयल, एम.के. (2003) "पर्यावरण शिक्षा" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पृष्ठ 466.

गुप्ता, आर.डी. एवं सिंह के. वी. (2004) "पर्यावरण अध्ययन" आर.लाल बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ 346

गुर्जर, आर. एवं जाट, वी.सी. (2003) "संसाधन एवं पर्यावरण" पंचशील प्रकाशन जयपुर।

कुमारी. एन. (2003) सिग्निफिकेंस ऑफ एनवायर्नमेन्टल एजुकेशन इन इण्डिया एनवायर्नमेन्टल, इन इण्डिया, राधा पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली

वर्मा, जी. एस. (2005) पर्यावरण अध्ययन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ